



श्री रविवार की आरती

कहूँ लगी आरती दास करेंगे ।
सकल जगत जाकि जोति विराजे ॥ टेक ॥ १ ॥
सात समुद्र जाके चरण बसे ।
कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम ॥ २ ॥
कोटि भानु जाके नख की शोभा ।
कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम ॥ ३ ॥
भार उठारह रोमावलि जाके ।
कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम ॥ ४ ॥
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे ।
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम ॥ ५ ॥
अमित कोटि जाके बाजा बाजे ।
कहा भयो झनकार करे हो राम ॥ ६ ॥
चार वेद जाके मुख की शोभा ।
कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम ॥ ७ ॥
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक ।
नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम ॥ ८ ॥
हिम मंदार जाको पवन झकेरिं ।
कहा भयो शिर चँवर ढरे हो राम ॥ ९ ॥
लख चौरासी बन्दे छुड़ाये ।
केवल हरियश नामदेव गाये ॥ हो रामा ॥ १० ॥

